सप्तम् – अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

साहित्य वाचस्पति महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व प्रगतिशील चेतना के सतत् विकास का साक्षी तथा धरोहर है। यह व्यक्तित्व अपराजेय जिजीविषा, अन्तहीन जिज्ञासा, जीवन वैज्ञानिक दृष्टि से निर्मित व संगठित था। सम्भवतः इन्हीं गतिशील तत्वों से वह किसी भी प्रकार के बन्धन से निर्बन्ध रहे, न देश ने इन्हें बाँधा, न काल ने। आजमगढ़ के एक छोटे से गाँव पन्दहा में जन्म लेकर विश्वस्तरीय महनीयता के कीर्ति शिखर तक पहुँचने की गौरव गाथा स्वयभू पण्डित राहुल की अद्वितीय व अनुकरणीय जीवन गाथा है।

नख से शिख तक भारतीयता के समुद्र में गोते लगाने वाले हिन्दी साहित्य के भगीरथ राहुल सांकृत्यायन का हिन्दी साहित्य अतुलनीय अवदान है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन–यात्रा में विपुल साहित्य का संचयन और सृजन किया है। वे स्वयं में एक स्वच्छन्द और बहुआयामी संस्था थे। इनकी दार्शनिक गवेषणात्मक एवं सूक्ष्म ऐतिहासिक दृष्टि अमूल्य और अद्वितीय है। इनकी ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी साहित्य को नये जीवन के लिए नयी दिशाएँ और नयी दृष्टियाँ मिली हैं। ऐसी अन्तदृष्टि किसी जीर्ण–शीर्ण, रूढिगत और विकृत समाज के ढाँचे को परिवर्तित करने के लिए परम आवश्यक होती है। उन्हें विश्व समाज को नव–निर्माण और नव–निर्मित का अद्भुत अवसर मिला है। सदियों से जो स्पष्टिकरण रूढिग्रस्त रचनाकार और समाज नहीं कर पाये उसे पण्डित की स्पष्ट और स्वतन्त्र धारा ने कर दिखाया। ऐसा चतुर्मुखी साहित्य–सर्जक हिन्दी जगत में प्राप्त होना अत्यन्त दुर्लभ और दुष्कर है। उन्होंने भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का ही नहीं वरन् विश्व साहित्य और संस्कृति का सूक्ष्म अध्ययन भी किया।

प्रबुद्ध राहुल जी बेजोड व बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे। उन्होंने भगवान बुद्ध के इस कथन को आत्मसात् करके चरितार्थ किया– "अत्तानों अन्त दोपो भव" (अपने दीपक स्वयं

बनो)। आत्मनिर्भर बनकर चलो। न तो कोई एक पुस्तक, या कोई एक महापुरूष सबके लिए अन्तिम सत्य है, न वह सबको मार्ग दिखा सकता है। विश्व के अधिकाशं भागों का भ्रमण, तद्विषयक समाज–साहित्य–संस्कृति का अनुशीलन, इतिहास, पुरातत्व–दर्शन का तत्वानुसंधान, कोश निर्माण, साहित्य सृजन आदि से लेखन की पृथक पहचान उनके लेखकीय व्यक्तित्व की विराटता तथा महानीयता का प्रतीक है। लगभग 150 प्रकाशित पुस्तकों के रचनाकार राहुल जी एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, वैष्णव मठ के महन्त, आर्य समाज प्रचारक, बौद्ध भिक्षु और अन्ततः कम्युनिष्ट पार्टी के सदस्य रहे। देश–देशान्तर की यात्रा के साथ–साथ विचारों की यात्रा उनकी मूल विशिष्टता रही। विद्यालयी शिक्षा में मैट्रिक स्तर तक की भी शिक्षा न ग्रहण कर पाने वाले राहुल जी लंका तथा मास्को के विश्वविद्यालयों में सम्मानपूर्वक प्रध्यापक बनाये गये और उन्हें त्रिपिटकाचार्य, महापण्डित, डी0 लिट् पद्मभूषण आदि अलंकरणों तथा उपाधियों से विभूषित किया गया।

आलोक पुंज राहुल जी असाधारण पर्यटक थे। उनका विश्वभ्रमण तथा लेखन उन्हें ह्वेनसांग के तुल्य खड़ा करता है। संसार के विभिन्न भू–खण्डों का भ्रमणकर उन्होंने विश्व–पर्यटक का कीर्तिमान स्थापित किया था। इन्होंने अपने वृहत् उपयोगी एवं सर्जनात्मक साहित्य की रचना द्वारा भारतीय समाज को प्रभावित किया, उसे दिशा–निर्देश दिया, स्वस्थ एवम् स्वच्छ जीवन दृष्टि प्रदान की।

उन्होंने किसी एक साहित्य विधा में सीमित होकर नहीं लिखा, किसी विशेष विषय में आबद्ध होकर लेखनी नहीं चलाई, प्रत्युत हिन्दी भाषा के जिस क्षेत्र में अभाव को देखा, वह चाहे विधात्मक हो या विषयात्मक, उसी की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी लेखनी का चमत्कार दिखाया। अपने विराट् व्यक्तित्व के अनुरूप ही उन्होंने साहित्य–सर्जना की तथा विभिन्न साहित्यिक विधाओं को सम्पन्न बनाया। साहित्य सर्जक राहुल जी के मानस के तीन आयाम हैं– साहित्यकार, इतिहासकार विद्वान तथा पुरातत्ववेता और मार्क्सवादी एवं बौद्ध दार्शनिक।

हमारे अध्ययन विषय की सीमा राहुल जी के यात्रा साहित्य तक ही रही है, लेकिन इतिहसकार साहित्यकार और दार्शनिक राहुल में एक ही विश्व'दृष्टिकोण परिव्याप्त है। अतः उनका सर्जनात्मक साहित्य समाज शास्त्र और दर्शन शास्त्र दोनो से अन्वित हुआ है। राहुल जी ने सर्वप्रथम यह प्रदर्शित किया कि शुद्ध साहित्य कितना सीमित, एक भावात्मक अपर्याप्त, रोमांटिक तथा कई सीमाओं तक निरर्थक होता है। यह उनके सम्पूर्ण जीवन तथा समग्र रचना संसार का निष्कर्ष है। वस्तुतः महान मनीषी समाजिक और दार्शनिक होकर ही राष्ट्रीय संस्कृत को चरितार्थ कर सकता है। सम्भवतः इन्ही गुणो के कारण प्राच्य विद्या के महान सिल्वालेवी और श्चेर्वात्स्की ने इन्हें उपरोक्त विषयों का सर्वोच्च भारतीय विद्वान स्वीकार किया है।

यायावर के रूप में आधुनिक स्मृति ज्ञानकीर्ति तथा मार्कोपोलो माने जा सकते हैं उन्होने अपने विभिन्न देशों के यात्राओं के अनुभव को साहित्यिक रूप में लेखबद्ध किया है। राहुल जी की यात्राओं में वर्णित यात्रा क्षेत्र विविध है, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक सूक्ष्म पर्यवेक्षण तथा परिवेश का यथार्थ अंकन है, निबन्धकार की सी मस्ती तथा भावुक कलाकार की संवेदनीयता भी उनमें प्राप्त है। हिन्दी के यात्रा साहित्य के गिने चुने लेखको में राहुल शीर्षस्थ है, इसमें सन्देह नहीं। उनके अधिकांश यात्रा–वर्णन भौगोलिक एवं ऐतिहासिक वर्णनो की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। वे ज्ञान वर्धक या रोचक यात्रा वृतान्त हैं। 'हिमालय परिचय', 'कुमांऊँ', 'किन्नर देश में', 'गढ़वाल' आदि ऐसी ही कृतियां हैं। राहुल जी की मेरी लद्दाख यात्रा 'मेरी यूरोप यात्रा' तथा तिब्बत सम्बन्धी यात्राओं में प्रौढ़ यात्रा साहित्य की सम्भावनाएं निहित हैं। 'घुमक्कड़ शास्त्र' में राहुल के यात्रा सम्बन्धी विचार हैं। घुमक्कण्ड़ राहुल की यह अमर कृति है। इसलिए हमने राहुल जी को पृथ्वी कथा कहने वाला बताया है। कलात्मक यात्रा साहित्य का शुभारम्भ राहुल जी से होता है। अज्ञेय, मोहन राकेश तथा निर्मल वर्मा इन्ही परंपरा में आते हैं। इस दृष्टि से भी भविष्य में राहुल जी का अध्ययन हो

सकता है ताकि हम आधुनिक संदर्भो में एशिया को समझ सके। फलतः राहुल जी हमारे सांकृतिक राजदूत भी सिद्ध होते हैं।

राहुल साहित्य में प्रयुक्त भाषाशैली की स्वतंत्र रूप से महत्ता हैं। व्यापक दृष्टिकोण के कारण देश कालानुरूप विशिष्टता से सम्पन्न है। उनकी समर्थ शब्दावली एक ओर प्राचीन–संस्कृति के सांकृतिक वातावरण में मूर्त करती है तो दूसरी तरफ साधारण बोल चाल की भाषा में जन–सामान्य की बात प्रस्तुत करती है। अतः उनका गम्भीर एवं विशद ज्ञान इन रचनाओं के रूप में साकार हुआ है, भाषा उनके संकेतानुसार भावों का अनुगमन करती है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, प्रान्तीय, अंग्रेजी, फ्रेंच, तिब्बती आदि अनेक प्रकार के शब्दो का सहज रूप में प्रयोग किया है। उन्होने नवीन प्रचलित शब्दो के साथ अप्रचलित एवं उनके साम्य पर नवीन शब्दावली का प्रयोग कर हिन्दी–शब्द कोश के विकास में अपना सहयोग दिया है। अगर किसी लेखक की उच्चता उसके नवीन शब्द प्रयोग के परिमाण के आधार पर मानी जाय तो निश्चय ही राहुल सांकृत्यायन का ऐसे समृद्ध कलाकारों में सर्वोच्च स्थान होगा। उन्होंने भाषा को समर्थ एवं प्रभावशाली बनाने के लिए लक्षणों एवं व्यंजना शब्द शक्तियों का भी सहज रूप में प्रयोग किया है। मुहावरों, लोकोक्तियों एवं सूक्तियों को वे भाषा की सम्पन्नता का लक्षण मानते हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि साम्य मूलक अलंकारों का नैसर्गिक–रूप में प्रयोग हुआ है। राहुल सांस्कृत्यायन की शैली प्रमुखतः वर्णनात्मक है। उनमें वर्णन उपस्थित करने की अतुल एवं विलक्षण–क्षमता है। यह वर्णनात्मक शैली संवेदना एवं भाव प्रधान होने के साथ चित्रात्मक भी है। देशकालानुरूप उनकी शैली विभिन्न रूप धारण करती चलती है तत्थों के वर्णन में एनकी शैली कहीं विवरणात्मक है, तो अन्यत्र विश्लेषणात्मक, तो कहीं आलोचनात्मक और सैद्धान्तिक। उन्हाने साहित्यिक या काव्यात्मक भाषा शैली की व्यंजनाओं आदि का सहारा न लेते हुए ऋजु एवं सहज भाषा शैली का प्रयोग किया है। उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता, सहजता एवं सरलता शैली में मुखरित है। हिन्दी भाषा शैली

की समृद्धि में राहुल का योग अप्रतिम है।

सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न राहुल का स्वनिर्मित जीवन दर्शन उनकी साहित्यिक कृतियों के आधार पर सहज अभिगम्य है। उन्हाने साहित्यिक माध्यम द्वारा अपने उद्देश्य मान्यताओं एवं विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। तत्कालीन युग से प्रभावित होने के कारण उनकी राष्ट्रीय चेतना उत्कर्ष को प्राप्त कर सकी है। यद्यपि उनका जीवन उस युग के आवेश से मुक्त नहीं रहा बल्कि परतन्त्र भारत की मुक्ति और उसके बाद समष्टिगत विकास उनका आदर्श रहा। उन्हे विभिन्न सामाजिक विभीषकाओं एवं विषमताओं में आक्रान्त तथा पीडित मानवता के प्रति विशेष संवेदना एवं सहानुभूति रही। इस दृष्टि से वे क्रांतिकारी रहे तथा समाज में 'पुराण–पंथी' रूढ़िग्रस्त ढ़ांचे को ध्वस्त कर नवनिर्माण के इच्छुक रहे । वे समाजिक एवं आर्थिक विषमता के समापन हेतु साम्यवादी समाज की स्थापना के पक्ष में रहे हैं। अपने इन विचारो को सिद्ध करने के लिए उन्होने प्राचीन गणतन्त्र, बौद्ध दर्शन एवं मज्जदक के समतावादी स्वप्न का उल्लेख किया है।उनका मत है कि मानवता का कल्याण तभी सम्भव है जब देश में समता का प्रसार हो तथा धर्म मानवता का सरक्षक हो। राहुल ने धर्म के आडम्बर एवं रूढ़ि परम्पराओं की आलोचना करते हुए उसे मानवता का शोषक सिद्ध किया है। उन्होने धर्म एवं समाज के अस्वस्थ रूप के क्षय की कामना कर बौद्ध दर्शन एव साम्यवादी जीवन में आस्था अभिव्यक्त की है। स्वतंत्र विचारक राहुल ने मानवतावादी उपयोगी तत्वों का समाहार कर अपने दर्शन की निर्मिति कि है– वह है बुद्ध का अनिश्वर वादी उदार करूणामय दर्शन, गणतन्त्रीय एवं साम्यवादी समता। इन तीनों का सम्मिलत रूप उनके साहित्य एवं जीवन में प्रतिफलित है। उनका मत है कि मानवता का विकास एवं कल्याण साम्यवाद में ही है। साहित्य एवं जीवन के सद्पक्ष मानवतावादी दृष्टि कोण के प्रशंसक राहुल इनसे विरोधी तत्वों के कटु आलोचक रहे हैं।

साहित्य सर्जक राहुल जी का उद्देश्य साहित्य द्वारा मात्र मनोरंजन करना ही नहीं था

बल्कि उनके साहित्य में साहित्य और चिन्तन सहयोग और अन्ततः सम्बन्ध देखनो को मिलता है। जीवन और जगत् के प्रति अदम्य लालसा राहुल जी की यायावरी प्रवृत्ति की मूलाधार रही है। छाया चित्रकार फणी मुखर्जी ने 'सरस्वती' में उसकी मृत्यु के पश्चात लिखा' ''वे भारत के महान यात्री और घुमक्कण के बाद दूसरे लोक की यात्रा पर गये। वहॉ भी वे अपनी घुमक्कड़ी नहीं छोड़ेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।''[1]

राहुल जी को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उनके जन्म भर के विचारों की संगति मिलने का प्रयास न किया जाय। उन्होने जब जो कुछ सोचा, जब जो कुछ माना, वही लिखा, निर्भय होकर लिखा। उन्हें किसी प्रकार का लोभ लालच उनकी मान्यताओं से विमुख न कर सका। राहुल जी सचमुच जीवन–पर्यन्त छलांगो पर छलांगे मारते रहे। छलांग मारने की प्रक्रिया में नाम बदले, चोले बदले, धार्मिक मान्यताएं बदली, विचार भी बदलते रहे। उनकी यह परिवर्तनशीलता बौद्ध धर्म की देन थी।

साहित्य केवल अल्पालिक या सार्वकालिक रचना नहीं होती। वह एक देश या प्रदेश से उठकर सार्वदेशिक बन जाती है। कभी– कभी वह देश–काल परिस्थिति से परे ऐसे लोक में हमें पहुचाती है जहाँ देश और काल के भेद छोटे लगने लगते हैं, यह केवल मानव और मानव की अखण्ड मानवता मात्र रह जाती है। मानव भी यहाँ आंशिक रूप में देखा सुना जाता, बल्कि एक ऐसी इकाइ के रूप में देखा जाता है, जिसमें भावना, कल्पना, अभिव्यंजना सब एकाकार हो जाते हैं। अच्छा और सच्चा साहित्य मानव का, मानव के लिए और मानव द्वारा रचित शब्दो में लेखा–जोखा होता है। वह केवल संचित ज्ञान कोश का भंडार, नहीं न केवल 'जीवन की समीक्षा' ही होता है। यहॉ यह स्पष्ट है कि साहित्यकार कि दृष्टि जितनी व्यापक होगी हृदय जितना उदार होगा, ज्ञान जितना विशद् होगा और रचना शक्ति जितनी

1– सरस्वती अंक दिसम्बर 1966, पृ0 505

प्रभावशाली होगी उसका साहित्य पाठक या श्रोता के लिए महत्वपूर्ण होता है।

इस प्रकार राहुल साहित्य की अपनी सीमाएं एवं सम्भावनाएं हैं। उनका सम्पूर्ण साहित्य विचारो की प्रौढ़ता, उदातता एवं गरिमा से युक्त हैं। उसमें वर्तमान समाज के निर्माण के लिए उदांत संदेश एवं जीवन दर्शन है, समाज के विकृतांगो पर व्यंग्य है तथा उसमें व्याप्त राहुत का प्रगतिशील चिन्तक सवर्त्र मानवतावाद के विकास का स्वप्न देखता है। राहुल की भाषा सर्वत उनके विचारों को वहन करने में समर्थ है। नवनवोन्मेषशालिनी, सर्वतोमुखी प्रतिभा से सम्पन्न, ऊर्जस्वी पुरोधा साहित्यकार राहुल सांस्कृतयायन की सृजनात्मक विलक्षणता भूयोभूम वरेण्य है। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि राहुल वर्तमान–आज तथा भविष्य–कल के कलाकृती एवं संस्कृति सारथी है।